सच्ची स्वतंत्रता

- ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

स्वतंत्रता के इतिहास का अध्याय बड़ा ही कठिन रहा है। इस दौर को शब्दों में बयाँ करना एक आम व्यक्ति के वश की बात नहीं है, क्योंकि सभी उस समय की परिस्थिति और मनोस्थिति से वाकिफ नहीं हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के वीरों का इतिहास अपने आप में एक चिरंतन छवि को लिए हुए है। हमें और देशवासियों को उन सपूतों पर गर्व है जिन्होंने भारत को परतंत्रता से मुक्त किया।

ऐसे भारत माँ के सपूतों के शौर्यबल, बुद्धिबल के लिए आदर से ससम्मान हम सभी देशवासियों का सर झुक जाता है। उनके त्याग और बलिदान के कारण ही आज हम गर्व से छाती चौड़ी करके चलते हैं। जिनकी याद मात्र से ही देशभक्ति का जोश दिल में उभर उठता है और हम सभी का हौसला बढ़ता है। आज़ादी की 69 वीं वर्षगाँठ हम सभी मना रहे हैं। ऐसे समय में हम सभी को संपूर्ण आज़ादी की सोच को उत्पन्न करने की ज़रूरत है, जो अभी भी हमारी कल्पना बन कर ही रही हुई है और वो यह है - `जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती थी बसेरा वो भारत देश था मेरा' इसी को साकार करने के लिए हम सभी को चरित्र और पवित्रता के बल को बढ़ाना होगा।

आज भी हम जब बापू गांधी जी को याद करते हैं तो उनके तीन बंदर जो बुरा न सुनो, बुरा न देखो, बुरा न बोलो की अद्‌भुत सोच को नमन करते हैं। परंतु इसके साथ-साथ अगर बुरा ना सोचो भी जोड़ दिया जाए तो देश को आगे ले जाने वा तरक्की करने में मील का पत्थर साबित हो सकता है। क्योंकि मनुष्य की सोच ही उसे अर्श पर बिठाती है या फर्श पर गिराती है।

वास्तव में सम्पूर्ण और सच्ची स्वतंत्रता तो इस वर्तमान परिदृश्य में किसी को भी प्राप्त हो ही नहीं सकती। जरा-मृत्यु, रोग-शोक, विवाद-विक्षिप्ती,अन्याय-आतंक, असमर्थता-अशान्ति आदि-आदि में से किसी न किसी क्लेश के परतंत्र होकर हरेक मनुष्य पीड़ित है। सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता वह है जिसमें मनुष्य को किसी भी प्रकार का कष्ट, क्लेश, कठिनाई या दुःख और अशान्ति न हो। ऐसी सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता ही का दूसरा नाम `मुक्ति' और `जीवन-मुक्ति' है। `मुक्ति' का अर्थ है देह-बंधन से, भव-बंधन से, कर्म और उसके फल से, जन्म और मृत्यु से सम्पूर्ण मुक्ति। जब मनुष्यात्मा इन सभी बंधनों को काट कर ब्रह्मलोक, परलोक अथवा परमधाम में विश्रामी होती है, तब उसकी दुःख से न्यारी अवस्था को `मुक्ति' कहते हैं। वहाँ चूंकि आत्मा को न काया प्राप्त है न माया ही प्रभावित करती है, इसलिए वहां वह सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त है। इसलिए `परमधाम' को मुक्तिधाम या `निर्वाणधाम' भी कहा जाता है।

जीवनमुक्तिधाम इससे भिन्न है। ``जीवनमुक्ति' वह अवस्था है जिसमें मनुष्य को तन तो प्राप्त है परन्तु किसी प्रकार का दुःख नहीं है और किसी भी परिस्थितियों का उनपर प्रभाव नहीं है। आत्मा की ऐसी अवस्था स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ में होती है। वहां न जन्म दुःख से होता है, न देहावसान की पीड़ा होती है, न तन का रोग सताता है, न मनुष्य को शत्रु का भय दुःखित करता है, न किसी भोग्य पदार्थ की कमी होती है, न ही मनुष्य का मन किसी बुराई के बंधन में होता है। मनुष्यात्मा को यह अवस्था जिस स्वर्गलोक अथवा वैकुण्ठ में प्राप्त होती है, वह लोक इस पृथ्वी से ऊपर कहीं नहीं है, बल्कि इसी भारत भूमि पर ही जब सतयुग में नर-नारी अपने दिव्य गुणों से युक्त जीवन के कारण श्री नारायण और श्री लक्ष्मी के समान या देवताओं के समान होते हैं तब यही देश `स्वर्ग' होता है।

ऐसी सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता, जिसे कि `मुक्ति' और जीवनमुक्ति कहा जाता है - सदा मुक्त, सर्व शक्तिमान, सर्व हितकारी परमपिता परमात्मा शिव के सिवाय अन्य कोई भी नहीं दिला सकता। यह स्वतंत्रता मन से काम, क्रोध आदि विकारों को बाहर निकालने से प्राप्त होती है। इसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को केवल ज्ञान और योग बल धारण करना होता है। भारत के स्वतन्त्रता दिवस पर परमात्मा शिव का यही सन्देश है कि `अब पवित्र बनो और योगी बनो', `जब छोड़ेंगे पाँच विकार तभी मिटेगा भ्रष्टाचार और मिलेगा सतयुगी दैवी स्वराज्य का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार '।

गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर आप देखेंगे कि देशवासियों के चारित्रिक पतन से ही देश का पतन हुआ है। जब तक हम पतन के इस चरित्रहीनता रूपी मुख्य मूल कारण का निवारण नहीं करते, तब तक हमारे सभी उपाय धरे के धरे रह जाएंगे, हमारी कोई भी योजना देश का उत्थान करने में सफल कभी नहीं होगी।

चरित्रहीनता क्या है? यह आज के मनुष्यों में व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह और देह-अभिमान, इन पांच विकारों रूपी माया का ही दूसरा नाम है। संसार की हरेक समस्या, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक, राष्ट्रीय हो या अन्तर्राष्ट्रीय, उसका मूल कारण ये पांच विकार ही हैं। जब तक विकार रहेंगे, समस्याएं रहेंगी और जब तक हम समस्याओं के अधीन हैं तब तक पराधीन ही हैं।

जब `स्व' अर्थात् अपने यानि अपनी इन्द्रियों के ऊपर `राज्य' कर सकेंगे, तभी देश में भी सच्चा स्वराज्य स्थापित हो सकेगा। कृषि, उद्योग एवं अन्य क्षेत्रों में भी सही ढंग से उन्नति तभी हो सकेगी जब पहले मनुष्यों के चरित्र का उत्थान होगा अर्थात् उनके मन-बुद्धि निर्विकारी बनेंगे। चरित्र ही समृद्ध राष्ट्र की नींव है और पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। चरित्र निर्माण के बिना राष्ट्र निर्माण की बात सोचना रेत की नींव पर किला खड़ा करने की तरह व्यर्थ है। इसलिए अगर हम जिस रामराज्य, जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती थी बसेरा, भारत में घी-दूध की नदियाँ बहती थी, की कल्पना को साकार करना चाहते हैं तो पहले स्वयं पर राज्य करने में सक्षम होने की ज़रूरत है, तभी हम स्वतंत्रता के साथ न्याय कर पायेंगे।

आत्मा की ऐसी अवस्था स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ में होती है। वहां न जन्म दुःख से होता है, न देहावसान की पीड़ा होती है, न तन का रोग सताता है, न मनुष्य को शत्रु का भय दुःखित करता है, न किसी भोग्य पदार्थ की कमी होती है, न ही मनुष्य का मन किसी बुराई के बंधन में होता है, ये है आत्मा की सच्ची स्वतंत्रता।

दिल्ली-वसंत विहार। झारखण्ड की राज्यपाल द्रौपदी मुरमू से मुलाकात के दौरान उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. क्षीरा। साथ हैं डॉ. प्रताप मिड्ढा,ग्लोबल हॉस्पिटल,माउण्ट आबू व ब्र.कु. नथमल,ओडिशा।

फरीदाबाद-से.8। योग गुरू स्वामी रामदेव जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनु, ब्र.कु. नीरू व ब्र.कु. गोविंद।

जोगवनी-विहार। 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का आध्यात्मिक रहस्य' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विद्यासागर केसरी,विधायक, बजरंग गांधी,नेशनल मेम्बर,ऑल इंडिया मध्य देशीय सभा, नरेश प्रसाद,वाइस चेयरमैन,नगर पंचायत, कृष्णा लोहिया, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. आशा व प्रवचन करते हुए ब्र.कु. कंचन।

नरवाना-हरियाणा। ग्रीष्मकालीन विद्यार्थी शिविर का शुभारंभ करते हुए राजकीय स्कूल के प्रिन्सीपल सुरेश जैन, सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. डॉ. साधुराम व ब्र.कु. विजय सिंह।

कादमा-हरियाणा। मैहड़ा गाँव में आयोजित 'प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. वसुधा, सरपंच सुमनजी, कृष्णा वन अधिकारी, विद्यार्थीगण व अन्य।

गया-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ऑफिसर ट्रेनिंग एकेडमी में राजयोग विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुनीता। सभा में उपस्थित हैं ब्रिगेडियर सिवेन्द्र सिंह, ब्रिगेडियर उपेन्द्र सिंह एवं हज़ार ऑफिसर्स।